सगरमाथा पर लहराते लाल परचम को लाल सलाम

13 फरवरी 1996 को नेकपा माओवादियों द्वारा शुरू किये गये जनयुद्व, 13,000 शहादतों तथा बेमिसाल बलिदानों की बदौलत नेपाल की क्रांति ने आखिरकार 240 साल पुरानी राजशाही को खत्म कर दिया है और नेपाल औपचारिक तौर पर गणतंत्र घोषित हो गया। अप्रैल 2006 में सात पार्टी गठबंधन के साथ माओवादियों के संश्रय के वक्त जो संशय और गफलत पैदा हुयी थी उसका भी पटाक्षेप हो गया। नेपाल में संविधान सभा चुनने की प्रक्रिया में सारी जनता ने भागीदारी की।

सितम्बर **2005** के बाद से नेपाल में जो प्रक्रिया घटित हुयी और हो रही है उसने देश–दुनिया के कम्युनिस्ट आंदोलन में विभ्रम तथा आशंकाओं को जन्म दिया। ये विभ्रम तथा आशंकाएं बनी हुयी हैं। खुद नेकपा (माओवादियों) के बीच भी।

विशेष तौर पर शत्रु वर्ग की पार्टियों के साथ **12** सूत्रीय समझौते, संयुक्त राष्ट्र की मध्यस्थता में संविधान सभा का चुनाव कराने, जन मुक्ति सेना को संयुक्त राष्ट्र संघ की निगरानी में बैरकों में रखने, हथियार प्रबंधन, अंतरिम सरकार में नेपाली कांग्रेस तथा एमाले को वरीयता दिये जाने इत्यादि मुद्दों पर भारत के कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन का रुख अतिशय आलोचना का रहा है और बना हुआ है।

हमारी नजर में यह रणकौशलात्मक संश्रय और समझौता स्टालिन द्वारा हिटलर के साथ की गयी अनाक्रमण संधि तथा चाघ काई शेक के साथ माओ द्वारा किये गये चुडकिड समझौते की तरह का ही है। क्रांतिकारी पार्टियों के सामने निश्चय ही ऐसे मौके आते हैं जब उन्हें दुश्मन वर्गों के साथ रणकौशलात्मक संश्रय या समझौते करने पड़ सकते हैं। इन समझौतों को इसी दृष्टि से देखा जाना चाहिए कि इससे सर्वहारा क्रांति को व्यापक परिप्रेक्ष्य में फायदा होता है या नुकसान। हां इस तरह के समझौतों में दूरगामी तौर पर क्रांति का फायदा होने के बावजूद खतरे अवश्य ही शामिल होते हैं। और पार्टियों को इन खतरों का सामना करना ही होता है। नेकपा (माओवादी) ने भी **1991** से ही रणकौशल के स्तर पर प्रयोग किए हैं।

2001 के बाद भी नेकपा (माओवादी) ने युद्व विराम के लिए नेपाली शासकों के साथ समझौते किये। इन समझौतों ने नेकपा (माओवादी) के आंदोलन को और गति प्रदान करने के लिए ऊर्जा को समटने में मदद की। इन समझौतों ने माओवादियों के कई महत्वपूर्ण नेताओं तथा कार्यकर्ताओं की रिहाई में भी मदद की। इन समझौता प्रक्रियाओं में भी कई किस्म के खतरे मौजूद थे।

नेपाली जनता द्वारा दस सालों का जनयुद्व **2005** तक आते–आते एक ऐसे मुकाम पर आ खड़ा हुआ था जहां न तो शाही सेना का कोई हिस्सा टूटकर आंदोलन के साथ जुट पा रहा था, न ही नेकपा माओवादी शहरी क्षेत्रों में अपना आधार इतना मजबूत कर पा रही थी कि अपने बलबूते पर केन्द्रीय सत्ता पर कब्जा कर सके। **2002** से ही माओवादी नेपाल के ग्रामीण अंचलों में बड़े–बड़े प्रत्याक्रमणों को अंजाम दे रहे थे। पर सत्ता पर कब्जा कर जनवादी क्रांति सम्पन्न करना व उसे विकसित करना अभी संभव नहीं दिख रहा था।

हां इतना जरूर हुआ था कि राजा वीरेन्द्र की हत्या के बाद ज्ञानेन्द्र की नेपाली जनता के बीच में राजा के रूप में उतनी भी स्वीकार्यता नहीं बची थी जितनी कि वीरेन्द्र की थी। यानी राजशाही पहले से ज्यादा कमजोर हो गयी थी। दूसरा महत्वपूर्ण कारक यह पैदा हो गया था कि नेपाली शासक वर्ग के बीच अंतर्विरोध काफी तीखे हो गये थे। ज्ञानेन्द्र के सत्ताशीन होने के बाद से ही माओवादियों के दमन के लिए सेना का संचालन हुआ और बुर्जुआ पार्टियों के हाथों से सत्ता छीनी गयी। **2001** व **2003** की शांति वार्ताओं की विफलता का प्रमुख कारण यही था कि कोई भी राजनीतिक दल संविधान सभा के चुनाव तथा राजतंत्र की पूर्णतः समाप्ति के पक्ष में नहीं था। **2005** तक आते–आते राजशाही और बुर्जुआ राजनीतिक दलों के बीच अंतर्विरोध ज्यादा तीखे हो चुके थे। इसी ने वह आधार पैदा किया जिससे माओवादी राजतंत्र को खत्म कर जनवादी क्रांति की दिशा में आगे बढ़ने के लिए बुर्जुआ राजनीतिक दलों के साथ संश्रय कायम कर सकते थे।

इस दौरान राजा को अमेरिका का समर्थन जारी रहा। भारत ने इस बारे में अपनी कोई राय जाहिर नहीं की। भारत भी माओवादियों के खिलाफ रहा और अंत में प्रतीकात्मक राजतंत्र का पक्षधर बना। **2005** में स्थितियों में यह बदलाव नहीं आया था कि बुर्जुआ राजनीतिक दल राजशाही को ध्वस्त करने की जमीन पर खड़े हो चुके हों। पर राजा द्वारा जनता को दिये गये सीमित जनवाद के हरण, आपातकाल लगाए जाने, माओवादियों के निर्मम दमन, जनता के खिलाफ सेना का संचालन इत्यादि का राजनीतिक दलों द्वारा छद्म विरोध जनता के बीच उनकी रही–सही साख को खत्म कर सकता था। यहां यह भी गौरतलब है कि नेपाली कांग्रेस तथा एमाले आम चुनावों में अपनी जीत के प्रति भी अतिआत्मविश्वास का शिकार थे। यही वो आधार था जहां से माओवादियों और राजनीतिक दलों के बीच संश्रय व समझौते की संभावना पैदा हुई।

क्रांतियां एक–दूसरे का दोहराव नहीं होतीं। क्रांतियां किसी बंधी–बंधायी लीक पर नहीं चलतीं। तत्कालीन राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों में क्रांति अपना एक रास्ता बनाती है जो किसी दूसरी क्रांति के गुण लिए जरूर होगी लेकिन उसका दोहराव नहीं। रूसी क्रांति के बाद चीनी क्रांति और अब नेपाली क्रांति ने इसी बात को पुष्ट किया है।

यहां यह दोहरा देना जरूरी है कि नेपाल एक भू–आवेष्ठित देश है। भू–राजनीतिक दृष्टि से दुनिया की राजनीति में कम प्रभाव डालने वाला और संसाधनों के मामले में अपेक्षाकृत कमजोर मुल्क है। आज वैश्विक परिस्थितियां भी ऐसी नहीं हैं कि सर्वहारा क्रांति को गति व आवेग प्रदान करें। पूरी दुनिया का मजदूर आंदोलन प्रत्याक्रमण के बजाय रक्षात्मक मुद्रा में है। न ही कोई समाजवादी खेमा है न समाजवादी देश। न ही अंतर्साम्राज्यवादी अंतर्विरोध ही इस अवस्था में हैं कि उनका लाभ क्रांतिकारी आंदोलन को हासिल हो सके।

इन विपरीत स्थितियों में नेपाल का क्रांतिकारी आंदोलन **10** सालों के जनयुद्व के लगातार बढ़ते जा रहे प्रभाव के बाद एक तात्कालिक ठहराव की स्थिति में पहुंच गया था। जहां नेपाल के **70%** भू–भाग पर पूर्ण नियंत्रण कायम हो जाने के बावजूद माओवादी केन्द्रीय सत्ता पर कब्जा नहीं कर पा रहे थे।

नेकपा (माओवादी) **2001** से ही इस मामले में भी साफ थी कि दीर्घकालीन लोक युद्व (चीनी रास्ते) की नेपाल में सीमाएं हैं। अतः ग्रामीण क्षेत्रों में एक हद तक दीर्घकालीन लोक युद्व के रास्ते पर चलकर नियंत्रण कायम कर लेने के बाद शहरी क्षेत्रों व केन्द्रीय सत्ता के प्रमुख केद्रों में व्यापक जनांदोलन खड़े करने होंगे। इन जनांदोलनों की पृष्ठभूमि में जनमुक्ति सेना व जनयुद्व मुख्य ताकत का काम करेंगे।

सितम्बर **2005** तक आते–आते स्थिति वहां पहुंच गयी जहां बुर्जुआ राजनीतिक दल भारतीय विस्तारवाद की शह पर तात्कालिक तौर पर राजशाही के खिलाफ खड़े हो गये। अब ऐसा न करने पर उनके अपने जनाधार के खो जाने का खतरा मौजूद था। बाद के समय संविधान सभा के चुनाव परिणामों ने इसकी पुष्टि भी की। तब नेपाली कांग्रेस और एमाले तथा भारतीय विस्तारवादियों ने भी यह मान लिया था कि राजशाही के किसी भी हद तक उन्मूलन का श्रेय उन्हें मिलेगा। और बाद में वे माओवादियों से निपट लेंगे।

सितम्बर **2005** के बाद हुई समझौता वार्ताओं की सफलता **12** सूत्रीय समझौते तथा अप्रैल **2006** के व्यापक जन उभार के रूप में सामने आयी। अप्रैल जन उभार के समय नेपाल की क्रांतिकारी जनता ने राजशाही को ध्वस्त कर एक नये नेपाल का मार्ग प्रशस्त किया।

राजतंत्र नेपाल के राजनीतिक जीवन की मुख्यधारा से दरकिनार हो गया। इसका पूर्ण श्रेय नेपाल की क्रांतिकारी जनता व नेकपा माओवादियों के जनयुद्व को जाता है। इसका श्रेय किसी भी रूप में बुर्जुआ राजनीतिक दलों को देना राजनीतिक धूर्तता होगी। बुर्जुआ राजनीतिक दल अगर इस प्रक्रिया में शामिल नहीं होते तो वे अपना जनाधार माओवादियों को सौंप देते और ऐसा हुआ भी। अप्रैल जनउभार का समर्थन करने व उसमें शामिल होने के बावजूद नेकपा एमाले व नेपाली कांग्रेस ने अपना जनाधार कमजोर कर दिया। सभी प्रमुख बुर्जुआ नेताओं की साख का भट्ठा बैठ गया। खासतौर पर काठमांडो घाटी में एमाले का गढ़ ध्वस्त हो गया। आज यह स्पष्ट है।

अप्रैल **2006** के जनउभार ने नेपाल के संदर्भ में अमरीकी साम्राज्यवाद के मंसूबों को धक्का पहुंचाया। इसने नेपाल में बढ़ते जा रहे क्रांतिकारी आंदोलन से निपटने की उसकी उम्मीदों को कमजोर किया। वह खुले–छिपे तौर पर प्रतिक्रियावादी राजशाही के साथ खड़ा था। इस **12** सूत्रीय समझौते ने नेकपा माओवादियों की 'बागी', 'आतंकवादी' सेना को समूचे देश व दुनिया के सामने एक राजनीतिक ताकत के तौर पर स्वीकार्य बनाया। संयुक्त राष्ट्र संघ के पर्यवेक्षकों की निगरानी में बैरकों में जन मुक्ति सेना को बिठाकर युद्व विराम की घोषणा के बावजूद उसे सातों राजनीतिक दलों, भारत द्वारा प्रकारान्तर से किसी–न–किसी रूप में मान्यता देना ही था। क्योंकि यही सेना माओवादियों द्वारा सालों से चलाए जा रहे 'आतंकवाद' की प्रमुख कार्यकारी शक्ति थी। और माओवादियों को अमरीका ने अभी भी आतंकवादियों की सूची में रखकर उनके खिलाफ रेड कार्नर नोटिस जारी किया हुआ था।

12 सूत्रीय समझौते के बाद नेपाल के बुर्जुआ राजनीतिक दलों के लिए अब मुश्किल था कि वे राजशाही को बचाने का प्रयास करें। खुले रूप में किए जाने वाले ऐसे प्रयास उन्हें नेपाली जनता के सामने बेपर्दा ही करते। अप्रैल **2006** में **19** दिनों के व्यापक जनउभार ने नेपाल से राजशाही के उन्मूलन के काम को सम्पन्न करने का रंगमंच तैयार कर दिया था। अब आने वाले दिनों में राजशाही के सफाए व नेपाल को एक जनवादी गणराज्य बनाने के लिए ठोस रूप तय होने थे।

दुनिया के समूचे मीडिया ने यह प्रचारित करना शुरू कर दिया कि नेकपा माओवादी जो काम दस सालों के जनयुद्व के द्वारा सम्पन्न नहीं कर सकी उस काम को उनके राजनीति की मुख्यधारा में शामिल होने के बाद सम्पन्न किया जा सका है। मगर सच यही था कि दस सालों के जनयुद्व की पृष्ठभूमि ने ही अप्रैल **2006** के उस जनउभार को ताकत दी थी जिसने राजा को निःशक्त बना दिया था।

सातों संसदीय दलों के साथ माओवादियों ने इस शर्त के साथ अंतरिम सरकार का गठन किया कि जल्द ही संविधान सभा के लिए चुनाव सम्पन्न कराए जायेंगे। अंतरिम सरकार एक ऐसा मंच बना जिसका इस्तेमाल माओवादियों ने बुर्जुआ दलों की राजशाही व भारतीय विस्तारवाद परस्ती को नेपाली जनता के सामने उजागर करने के लिए किया। बुर्जुआ संसदीय दलों ने भी किसी–न–किसी रूप में राजशाही को बचाए रखने तथा माओवादियों के खिलाफ परिस्थितियां तैयार करने का काम शुरू किया। अंतरिम सरकार में माओवादी वर्चस्व में नहीं थे।

देश में जनवादी गणतंत्र कायम होने की पृष्ठभूमि तैयार हो चुकी थी और इसे सम्पन्न करने वाली प्रमुख शक्ति नेकपा (माओवादी) सत्ता में वर्चस्व की स्थिति में नहीं थी। सर्वहारा वर्ग की पार्टी नेकपा (माओवादी) के नेतृत्व में चल रही यह क्रांति एक ऐसे पड़ाव पर थी जहां जनवादी कार्यभारों को सम्पन्न होना बस समय की बात थी मगर नव जनवादी राज्य कायम नहीं हुआ था। सर्वहारा वर्ग सत्ता में वर्चस्व की स्थिति में नहीं था। राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों की जटिलताओं ने **21**वीं सदी की पहली क्रांति को एक भिन्न स्वरूप दे दिया था। समूची दुनिया का कम्युनिस्ट आंदोलन इस घटनाक्रम को अपनी सफलता, उल्लास के साथ–साथ संदेह की दृष्टि से देख रहा था। भारत के कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन में खुद माओवादियों के साथ लम्बे बिरादराना सम्बन्धों में बंधे संगठनों तक ने नेपाली पार्टी के **12** सूत्रीय समझौते के बाद किये गये युद्व विराम तथा उसके अंतरिम सरकार में शामिल होने के रणकौशल को गलत बताया। साथ ही ये संगठन माओवादियों को क्रांतिकारी भी मानते रहे। कमोबेश सभी पार्टी संगठनों में और खुद नेकपा माओवादियों के बीच इस रणकौशल को लेकर बहसें जारी रहीं।

अप्रैल **2006** के विशाल जनउभार के बाद भी जनता का जनवादी मोर्चा, जनमुक्ति सेना, कम्युनिस्ट पार्टी ('तीन जादुई हथियार') को ही नेपाल के राजनीतिक भविष्य का निर्माण करना था। अप्रैल जनउभार की प्रेरक शक्ति भी यही थे। फर्क सिर्फ यह था कि अप्रैल जनउभार के बीच अब तक केन्द्रीय व निर्णायक भूमिका में रही जन मुक्ति सेना हाल–फिलहाल पृष्ठभूमि में चली गयी। अब जनता का संयुक्त मोर्चा अपने पूर्ण आवेग के साथ रंगमंच पर सामने आ गया। माओवादियों ने जनता के बीच व्यापक प्रचार व उद्वेलन के जरिये प्रतिक्रियावादी शासकों के खिलाफ राजनीतिक हमला बोल दिया। यह राजनीतिक हमला सामरिक आक्रमण के द्वारा पैदा किए गये आवेग पर सवार था और सामरिक ताकत अब भी इसकी रीढ़ थे।

खुद नेकपा (माओवादी) के अनुसार अप्रैल जनउभार से पहले तथा बाद में 'नेपाली क्रांति एक निर्णायक बिंदु पर खड़ी है।' यह यहां से आगे भी बढ़ सकती है अथवा इसी मुकाम पर ठहराव का शिकार भी हो सकती है। यानी यह जनवादी गणतंत्र कायम करते हुए नव जनवादी राज्य कायम करके आगे की दिशा में भी बढ़ सकती है और जनवादी गणतंत्र कायम करने भर तक सीमित भी रह सकती है।

माओवादियों द्वारा तय किये गये इस नए रणकौशल ने नेपाली जनता को राजतंत्र से मुक्ति दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। जनमुक्ति सेना द्वारा दस सालों में की गयी छोटी–बड़ी **5000** से अधिक सैन्य कार्रवाइयों तथा नेपाली जनता के बीच माओवादियों के व्यापक राजनैतिक आधार के बावजूद सात पार्टी गठबंधन के साथ रणकौशलात्मक संश्रय कामय किये बिना अप्रैल के **19** दिनों तक चला जनउभार सम्भव नहीं था। जो कोई भी यह कहता है कि माओवादियों को सात राजनीतिक दलों के साथ समझौता कायम करने के बजाय जनयुद्व को ही और आगे जारी रखना चाहिए था वह अपने सारतत्व में नेपाली क्रांति द्वारा आत्महत्या कर लेने की ही बात करता है। और उसकी क्रांति की गतिकी तथा इस दौरान अपनाए जाने वाले रणकौशलों की समझ यांत्रिक व जड़सूत्रवादी है।

जैसा कि हम पहले कह आये हैं केन्द्रीय सत्ता पर कब्जे के सवाल को हल करने के लिए नेपाली माओवादी एक भिन्न रणकौशल अपनाने को विवश हुए तथा सातों बुर्जुआ राजनीतिक दलों के लिए भी वह रणकौशल वक्त की मांग थी। उनमें से किसी ने भी राजतंत्र का उन्मूलन कभी भी नहीं चाहा था।

माओवादियों द्वारा अख्तियार किया गया यह रणकौशल इस मामले में कम्युनिस्ट आंदोलन के समूचे इतिहास में नया था कि हाल–फिलहाल नव–जनवादी क्रांति को सम्पन्न करने के लिए उन्होंने बुर्जुआ संसद में सरकार तक में शामिल होना तय किया। वह भी अपेक्षाकृत गौण स्थिति में रह कर। यहां इस बात पर जोर देना आवश्यक होगा कि **10** सालों के जनयुद्व में तपी–तपायी जनमुक्ति सेना अब भी इसकी रीढ़ थी। अब भी माओवादियों की मुख्य ताकत थीऋ खुद उसके लिए, राजशाही व बुर्जुआ संसदीय दलों के लिए, भारतीय विस्तारवादियों तथा साम्राज्यवाद के लिए भी। जनमुक्ति सेना को लेकर किए गये समझौते तथा हथियार प्रबंधन के लिए माओवादियों द्वारा अख्तियार किये गए कूटनीतिक तौर–तरीकों की चर्चा हम यहां नहीं कर रहे हैं।

अप्रैल जनउभार के बाद शुरू हुए सातों राजनीतिक दलों, भारतीय विस्तारवाद तथा अमरीकी साम्राज्यवाद द्वारा घृणित हथकंडे अपनाकर राजशाही को किसी न किसी रूप में बचाने के प्रपंच। भारतीय हिंदुत्ववादी ताकतों ने बाकायदा खुलेआम नए नेपाल का खुला व उग्र विरोध शुरू कर दिया। अमरीकी साम्राज्यवाद द्वारा आतंकवादियों की सूची में डाले रखे जाने के बावजूद माओवादी अंतरिम सरकार में शामिल हुए।

संविधान सभा के चुनावों के लिए पहली तारीख जून **2007** तय की गयी। हालांकि इस समय यह प्रचार जोर–शोर के साथ किया जा रहा था कि माओवादी राजनीति की 'मुख्यधारा' में लौट आये हैं लेकिन सभी प्रतिक्रियावादी ताकतें नेपाल की क्रांतिकारी जनता की आकांक्षाओं व उसकी क्रांतिकारी संकल्पबद्वता से भयभीत थीं। अप्रैल **2006** के बाद से माओवादी जनता के बीच लोकप्रियता के चरम पर थे। माओवादियों के इस प्रभाव के मद्देनजर जून **2007** के चुनाव नहीं होने दिये गये। सभी बुर्जुआ राजनीतिक दलों के लिए यह जरूरी था कि माओवादियों के प्रभाव को कम किया जाए। उनके लिए मुसीबतें खड़ी की जाएं। इस दौरान प्रतिक्रियावादी ताकतों ने राजशाही विरोध का मुखौटा पहन कर भारतीय हिन्दुत्ववादियों के प्रत्यक्ष समर्थन से तराई में मधेसियों के मुद्दे को हवा दी। मीडिया में अपने प्रभाव का इस्तेमाल कर माओवादियों विशेषकर वाईसीएल के विरुद्व व्यापक दुष्प्रचार किया। नवम्बर के चुनाव पुनः टाल दिये गये। तब तक तराई के इलाके में मधेसी आंदोलन की आग तो जोर पकड़ चुकी थी मगर ये उन्हीं के लिए भस्मासुर बन गयी थी जिन्होंने इसे जन्म दिया था। माओवादियों के अनुसार इस दौरान मधेसियों के लगभग **30** छोटे–बड़े हथियारबंद ग्रुप तराई में सक्रिय रहे। इन्हें राजशाही, भारतीय हिन्दुत्ववादियों, भारतीय विस्तारवाद तथा अमरीकी साम्राज्यवाद का समर्थन प्राप्त था। इस समय तक नेपाल तथा विशेष तौर पर तराई में नेकपा (माओवादियों) के लिए स्थितियां जून की तुलना में अपेक्षाकृत प्रतिकूल हो गयीं थीं। इन दोनों कारणों की वजह से नवम्बर **2007** के चुनाव भी टल गये।

स्वयं माओवादियों ने भी समानुपातिक निर्वाचन प्रणाली तथा चुनाव में राजशाही के हस्तक्षेप को खत्म करने की अपनी शर्तें रखी। उनकी पहली मांग संविधान सभा के चुनाव के दौरान जनता की अपेक्षाकृत स्वस्थ जनभागीदारी को सुनिश्चित करने की मांग थी। दूसरी मांग का उद्देश्य था राजशाही के विरोध का मुखौटा पहनकर किसी न किसी रूप में उसे बचाये रखने की कोशिश करने वाली ताकतों का पर्दाफाश। बुर्जुआ राजनीतिक दलों के राजतंत्रपरस्त चरित्र का पर्दाफाश करने के उद्देश्य से उन्होंने अंतरिम सरकार में दोबारा शामिल होकर उन पर नेपाल को गणतंत्र घोषित करने का दबाव बनाया। जाहिर है यह अंतरिम सरकार के कार्यभारों का हिस्सा नहीं था। पर यह एक ऐसा एजेण्डा था जिससे किनाराकशी नेपाल की क्रांतिकारी जनता के बीच किसी भी राजनीतिक दल की साख को खत्म या कम कर सकता था। यह कहना भी कि इस सवाल को अंतरिम सरकार की कार्यसूची में लाना ही ठीक नहीं है, जनता के लिए राजतंत्र समर्थक होने का पर्याप्त संकेत होता। जनता के दिलों से, उनकी चेतना से राजतंत्र खत्म हो चुका था। विष्णु के अवतार पर जनता ढेले फेंक रही थी। बहरहाल, ठीक इसी मौके पर भारत सरकार द्वारा भी माधव नेपाल को भारत बुला कर यह हिदायत दी गयी कि वे किन्हीं भी हालातों में अंतरिम सरकार में माओवादियों के पक्ष में मतदान न करें। अंतरिम सरकार में नेपाल को गणतंत्र घोषित करने के लिए मतदान हुआ। 'वामपंथी' एमाले को अपने भारतीय आकाओं से नजरें चुराकर माओवादियों के पक्ष में मतदान करना पड़ा। एमाले का ऐसा करने का गौण कारण अंतरिम सरकार में वर्चस्व की स्थिति की उसकी आकांक्षा भी था। फिर भी महत्वपूर्ण बात यही थी कि जनता के बीच नंगा होकर अप्रासंगिक हो जाया जाय या फिलहाल इससे बचा जाय। यह तय हुआ कि संविधान सभा की पहली बैठक में ही राजतंत्र की समाप्ति की घोषणा कर दी जायेगी। संविधान सभा के चुनावों का अभी तक कोई भविष्य नहीं दिखायी दे रहा था और माओवादी रूप में भी राजतंत्र के खात्मे की लड़ाई जीत चुके थे। एमाले का यह मतदान भारत सरकार के मुंह पर एक तमाचा था मगर माओवादियों द्वारा लगाया गया।

अब चुनाव की तारीख अप्रैल **2008** घोषित की गयी। अब भारतीय विस्तारवादियों के हस्तक्षेप से कोईराला और देउबा का पुनर्मिलन हुआ। इससे नेपाली कांग्रेस के वोटों के बंटवारे का किस्सा खत्म हो गया। अंतरिम सरकार में गणतंत्र के पक्ष में मतदान के मद में चूर माधव नेपाल आश्वस्त थे कि जनादेश उन्हें मिलेगा। उन्हें गफलत थी कि माओवादी जिस रास्ते पर **2006** से चल रहे हैं 'उस रास्ते' पर तो वो सालों से चल रहे हैं। माधव नेपाल ने माओवादियों के साथ किसी भी तरह के गठबंधन से तो इंकार किया ही साथ ही छिछली टीका–टिप्पणियां भी कीं। मार्च में नेपाल स्थित भारतीय दूतावास में मधेस नेताओं तथा नेपाली कांग्रेस के बीच हुए आठ सूत्रीय समझौते ने भारतीय विस्तारवाद, एमाले तथा नेपाली कांग्रेस की निगाह में चुनाव का एक साफ मैदान तैयार कर दिया था। अब इस मैदान में माओवादियों का पटखनी खाना तो निश्चित था। तय होना था तो सिर्फ इतना कि एमाले या नेपाली कांग्रेस अकेले अपनी दम पर संविधान सभा में बहुमत में आयेंगे या फिर संश्रय के द्वारा।

10 अप्रैल को तय चुनावों के बावजूद अंतिम समय तक यह स्थिति बनी रही कि चुनाव नहीं हो सकेंगे। दोनों पक्ष इस तिथि को चुनाव सम्पन्न हो जाने को लेकर आशंकित बने रहे। माओवादियों द्वारा चुनाव में गड़बड़ियां फैलाने को गर्दोगुबार खड़ा करके अमरीकी साम्राज्यवाद तथा यूरोपीय यूनियन द्वारा पोषित गैर सरकारी संगठनों के अनुदान से लगभग **50,000** प्रेक्षकों का जाल तैयार किया गया। इसका उद्देश्य भी माओवादियों के खिलाफ देश–दुनिया में एक भय का वातावरण तैयार करना था। ताकि इससे वोटों का ध्रुवीकरण बुर्जुआ पार्टियों के पक्ष में हो सके। ऐन चुनाव से पहले कांग्रेस के गुंडों तथा पुलिस द्वारा वाई.सी.एल. के कार्यकर्ताओं की हत्या ने जनता के सामने तस्वीर साफ कर दी कि आतंकवादी कौन है? माओवादियों को चौतरफा घिरा महसूस कर बुर्जुआ राजनैतिक दलों ने संविधान सभा के चुनाव सम्पन्न होने दिये। माधव नेपाल ने तो मदमस्त होकर माओवादियों का माखौल तक उड़ाया।

चुनाव नतीजों ने नेपाली कांग्रेस तथा एमाले के साथ–साथ भारतीय विस्तारवादियों के भी होश फाख्ता कर दिए। अमरीकी साम्राज्यवादी तो पटखनी खा चुके थे। नेपाल के बुर्जुआ राजनीतिक दलों के लिए चुनाव परिणाम अप्रत्याशित हैं। काठमांडो की चंद सीटों के शुरुआती नतीजे नेपाली कांग्रेस के पक्ष में आए, नतीजों के बाद राजमहल में मनाया गया जश्न जल्द ही मरघट के सन्नाटे में तब्दील हो गया।

नेपाल की क्रांतिकारी जनता ने माओवादियों के पक्ष में जनादेश दिया था। अंतरिम संविधान द्वारा संविधान सभा के चुनावों के लिए दो तिहाई बहुमत तो नहीं मिला फिर भी वे सबसे ज्यादा मत व सीटें हासिल करने में कामयाब हुए।

नेकपा माओवादियों की केन्द्रीय समिति के **18** सदस्यों ने चुनाव लड़ा इनमें मात्र एक उम्मीदवार की मामूली वोटों से हार हुयी। नेपाली कांग्रेस तथा एमाले के सभी स्थापित नेता चुनाव में पराजित हुए। इस तरह नेपाल के **70** फीसदी भू–भाग पर कब्जा कर लेने के बाद राजतंत्र के खिलाफ सात पार्टी गठबंधन के साथ किया गया संश्रय कायम कर तथा सरकार में शामिल होकर माओवादियों ने राजशाही को ध्वस्त कर दिया। जैसा कि हमने 'लाल सलाम' के अंक **–13** में कहा था कि नेपाली क्रांति इस मुकाम पर खड़ी है जहां पर जनवादी कार्यभार सारतः पूरे हो चुके थे अब बस इस प्रक्रिया को कानूनी संवैधानिक रूप ग्रहण करने थे। अंतरिम सरकार के गठन के बाद से ही कानूनी–संवैधानिक रूप ग्रहण करने की प्रक्रिया जारी हो गयी थी। संविधान सभा के चुनाव परिणाम इस गति को त्वरण प्रदान करेंगे और सम्पन्न कर देंगे। नव–जनवादी क्रांति का यह उपचरण अभी जारी है।

नेपाली कांग्रेस तथा एमाले के नेताओं ने चुनाव में शर्मनाक पराजय के बाद अपने पदों से इस्तीफा दे दिया। उनके इस्तीफे की स्याही अभी सूखी भी नहीं थी कि वे बेहया होकर राज्य के महत्वपूर्ण पदों पर अपनी दावेदारी जताने लगे।

21वीं सदी की यह पहली क्रांति सर्वहारा की पार्टी नेकपा (माओवादी) के नेतृत्व में सम्पन्न हुयी है। जनवादी कार्यभारों को सम्पन्न कर सर्वहारा वर्ग प्रमुख शक्ति के रूप में सामने आ चुका है मगर बुर्जुआ वर्ग अभी गौण स्थिति में नहीं धकेला जा सका है वह भी अभी एक मजबूत राजनैतिक ताकत के तौर पर नेपाल के परिदृश्य में मौजूद है। नेपाल में नव–जनवादी राज्य कायम हो पाने की स्थितियां फिलहाल नहीं हैं। यदि जनमुक्ति सेना तथा नेपाली सेना का विलय हो भी जाता है तब भी सामरिक रूप में भी बुर्जुआ प्रभावशाली स्थिति में रहेगा। माओवादी अब आगे का सफर किस तरह तय करते हैं यह अभी भविष्य के गर्भ में है। बुर्जुआ वर्ग को सत्ता में गौण स्थिति में डाल देने के

लिए संविधान सभा चुनावों के बाद पटल पर आने वाला ढांचा कारगर नहीं हो सकता। अस्तित्व में आने वाले संसदीय ढांचे के माध्यम से नव–जनवादी राज्य कायम नहीं हो सकता। अब यह जरूरी है कि नेकपा (माओवादियों) का जनता के बीच आधार और ज्यादा विस्तारित हो और वह राजसत्ता में निर्णायक भूमिका अदा करने की स्थिति में आये।

इस रास्ते में आने वाली ढेरों चुनौतियों के अलावा यह भी महत्वपूर्ण है कि माओवादी समाजवाद के निर्माण के सम्बन्ध में, बहुदलीय राजनीतिक प्रणाली के सम्बन्ध में, क्रांति पूर्व व बाद की कम्युनिस्ट पार्टियों की कार्यपद्धति के सम्बन्ध में जितनी बातें करते रहे हैं इन सभी सवालों पर वे अपनी विचारधारात्मक जमीन का परित्याग करें। ये बातें सीधे–सीधे सामाजिक जनवादी भटकाव प्रतिबिम्बित करती हैं। नेपाली क्रांति के सामने बाहरी व भीतरी जितनी बाधाएं खड़ी हैं, उन्हें देखते हुए ये भटकाव नेपाल की नयी जनवादी क्रांति के इससे आगे के विकास के लिए बहुत घातक हैं।

बहरहाल, नेपाल की वर्तमान स्थिति ने मार्क्सवाद की पराजय की साम्राज्यवादियों की घोषणा को दिवालिया साबित कर दिया है। वर्ग–संघर्ष ही सर्वहारा वर्ग की सामंतवाद, पूंजीवाद तथा साम्राज्यवाद पर विजय की कुंजी है यह व्यवहार में एक बार फिर स्थापित हो चुका है। नेपाल की विजय ने यह स्थापित किया है कि राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के अपेक्षाकृत प्रतिकूल होने पर भी क्रांतिकारी आंदोलन विजयी हो सकते हैं।